भगवत् कृपा

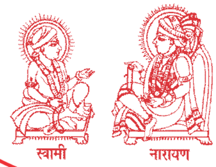

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 23 अंक : 2 | शनिवार, 26-2-2000 | वार्षिक चंदा : 50-00

ब्रह्मप्रवाह

प्र. ब्र.स्व. प. पू. बापा कई बार कहते हैं कि–
सच्चे भक्त होने के बाद माया जरूर कूदती है;
उसका विरोध होता है।
पर तब भी, उससे ऐसे भक्त के चैतन्य को
ज़रा-भी विक्षेप नहीं होता।
उसके कल्याण के मार्ग में थोड़ा भी विघ्न होता नहीं।
इतना समझ रखना कि–
सत्य वस्तु का विरोध होता है,
लेकिन उससे उसे कुछ बाधा नहीं आती।
सनातन सत्यों का हमेशा विरोध होता ही आया है;
लेकिन आखिर उसकी ही जीत होती है
और
सच्चे देवल में ही घंटे बजते हैं।
सो,
ऊपर-ऊपर से माया का विरोध हो,
तब भी-
निश्चिंतरूप से-निर्दोषबुद्धिपूर्वक भजन करने से
हम आत्यंतिक कल्याण के मार्ग पर अग्रसर ही रहेंगे।
और.......
दादर मंदिर में भी प.पू. महंतस्वामी कई बार बात करते कि-
हमारे विकास के लिए विरोध-टीका-चर्चा-बुराई जैसी वस्तुएँ
'नेसेसरी एवील' यानि कि–जरुरी चीज़ें हैं।
सो, **ऐसी बातें प्राकृत बुद्धि से लेनी ही नहीं।**
ये घटनाएं हमारा शुद्धिकरण करती जाती हैं।
सम्प्रदाय का इतिहास देखो–
अनादि महामुक्त सद्‌गुरु गोपाळानंदस्वामी जैसे
सिद्धयोगी की झेली में ही अंगारे डाले गये !
गुणातीत ज्ञान में भी–
सद् गुणातीतानंदस्वामी को मूल अक्षर कहने पर
मार पड़ती-अपमान होते।
अ.म.मु. भगतजी महाराज, अ.म.मु. जागास्वामी
और
अ.म.मु. गुरु कृष्णजी अदा जैसों का भी–
विरोध कुछ कम हुआ था क्या?
पर, इससे–
उनके कार्य में या उनके आत्यंतिक कल्याण में
कमी आई क्या?
बल्कि **'जामात करामात' बन कर**
ब्र. स्व. गुरुवर्य शास्त्रीजी महाराज के प्रताप से
सही बात घर-घर में प्रर्वतती हो गई।
प.पू. स्वामीबापा द्वारा अफ्रीका में करी बातें
इसके साथ भेजता हूँ, वह पढ़ना।
दि. 19-1-60 के दिन जींजा में उन्होंने बात करी थी कि–
'हम आत्मा हैं। देह को लगता है,–आत्मा को नहीं।'
आत्मारुप से वर्तने के लिए महाराज हमें आगे लेते हैं,
तो खुश रहना चाहिए।
देर-सबेर इस मार्ग पर चलना तो पड़ेगा ही।
सो,
अब तो गालियाँ मिलें वह भी देह को लगती है, यूं मानना।
लेकिन आत्मा को तो लगती ही नहीं।
जो मिले हैं वे अतिशय समर्थ हैं।
सो,

ऐसे वक्त मूर्ति को याद किया करना
और
आनंद में ही रहना।
यदि कुछ बोलेंगे–लिखेंगे तो बढ़ेगा,
वर्ना तो–
कुत्ते भौंक-भौंक कर थक जाते हैं,
यूं सब कुछ शांत हो जाएगा
और
हमें आत्मारूप से वर्तने का बल मिलेगा।
यह ब्रह्मविद्या की कॉलेज है।
सो, **इसमें नित्य नए एक्सपेरिमेन्ट्स चलते रहेंगे।**
और
प्रसंग बनते रहेंगे।
उसमें–
विद्या सीखा हुआ शांत रहकर,
सौ लकड़ियाँ मारने वालों के बीच में से
सभी देखते रह जाएं और वह निकल जाए–
यूं सभी को शर्मिंदा कर दे।
सो, ज्ञान की करामात सत्पुरुष के पास से सीख लेनी है।
तभी सुख आएगा, शांति रहेगी और आनंद वर्तेगा।'
ऐसा अलौकिक वारसा आज गुरुहरि ने हमें दिया है।
सो, बिल्कुल निडर रहकर, निर्भयता से लग पड़ना;
जिससे कि–
बिना समय गंवाये भगवान की मूर्ति सिद्ध हो जाए।
ऊपर-ऊपर से दिखते बाहरी अवरोधों
व
गलतफहमियाँ फैलने पर भी
अक्षरपुरुषोत्तम की हमारी निष्ठा की सम्पूर्ण रक्षा हुई
और
गुरुहरि एवं उनके संबंध वालों में
ज़रा-भी भावफेर नहीं हुआ,
वही स्वामिश्रीजी और प.पू. स्वामीबापा की
हम पर बड़ी से बड़ी कृपा है;
तो सभी बल में रहना।

–1967

✡✡✡✡✡

अमर दिन........ 7 मार्च !

समय के चक्र में कई प्रसंग,कतई क्षणें चिरंजीव होती हैं, शाश्वत् होती हैं। समय की तुलना में कई ऐसी ऐतिहासिक क्षण अधिक भव्य अविस्मरणीय होते है, अधिक विशेष और सूचक होते हैं..... हम सब के लिए जीवन का ऐसा ही क्षण–अविस्मरणीय दिन यानि–7 मार्च.... प्यारे प्रभु के शरीर छोड़ने का दिन.... स्थूलरूप से हम सब के बीच में से विदाई लेने का दिन !

नूतन समाज का सर्जन गुणातीत पुरुषों का कल्पनातीत परिश्रम और मंगलकारी आशीर्वादों की एक भव्य फलश्रुति है। प.पू. काकाजी की बलभरी वाणी–'तुम कौन? सम्राट के राजपुत्र ! मैं किसकी घरवाली?'–की आज भी स्मृति करते ही एक नई स्फूर्ति, बल, प्रेरणा, नवजीवन देती है। आपके विचारमात्र की झंकी, आपकी मूर्ति की स्मृति हमारे हृदय को प्रकाश प्रदान करके उज्ज्वल बनाती रहती है। समझती है कि–**भजन, स्मरण, धून, जपयज्ञ ही अमोघ शस्त्र है।** और...... प्रभु का साक्षात् स्वरूप होते हुए भी **प.पू. काकाजी स्वयं कितना भजन करते-करवाते थे**–वह हम सभी ने देखा; अनुभव किया है। **उन्होंने व्यावहारिक, मानसिक सभी समस्याओं का एकमात्र सर्वोपरि उपाय भजन ही लिया और वही सिखाया.....**

गुणातीत समाज के सब श्रेयार्थी मुक्तों का मंगल करने प.पू. काकाजी ने छलांग मारी है.... अक्षरधाम और हमारे हृदयाकाश में रहकर भी अन्तर्यामी और सर्वज्ञरूप से सभी के अन्तर में साक्षीभाव से रहकर प्रभु की प्रभुता का प्रकाश फैलाते चैतन्यों का विकास करके वे आगे ले जा रहे हैं। तो, अहोहो ! कैसी आपकी आत्मीयता, सुहृद्यता, एकता। कैसी आपकी दिव्यता, निर्दोषता, अखंडितता। उसे सापेक्ष नहीं बनाएं, कुंठित नहीं बनाएं.....

अब प.पू. काकाजी को शरीर छोड़े 14 साल हो जायेंगे... समय अपनी अविराम गति से दौड़े जा रहा है.... हम सब अपने 14 साल का ब्यौरा निकालें कि इन 14 सालों में हम प.पू. काकाजी के सिद्धांत से कितना जीये?

तो, 7 मार्च अपनी गल्तियों पर अंतदृष्टि करके हृदय की सच्चाई से प्रार्थना करके, स्वयं को बदल लेने का दिन...... इस मंगल अवसर पर क्यों ना इनके रहस्य को यथार्थ समझ कर आत्मसात करने का बल पायें और गुरुहरि काकाजी के श्रीचरणों में भाव समर्पण करें....

हे काकाजी ! हमारा कोई साधन आपको पहुँचे ऐसा नहीं है। हमारा साधन मात्र एक ही–आप और आपके स्वरूपों के प्रति अखंड दिव्यभाव ! **सच्चा लगे, झूठा लगे, एकपक्षीय लगे;**

जँचे या ना जँचे, लेकिन लौकिक–अलौकिक मूल्यांकन छोड़कर सिर्फ जँचाएं....... सब कुछ जँचाएं–अहोहोभाव से जँचाएं।

हमें आपका मानसपुत्र बनना है..... हमें आपकी संकल्प सृष्टि का पात्र बनना है.... हमें योगीजी महाराज का संकल्प स्वरूप बनना है ! आपका संकल्प हमारे जीवन में साकार हो उसके लिए हमें आपको सम्पूर्ण सहकार देना है।

आप स्वयं प्रभु का साक्षात् स्वरूप, लेकिन दास के दास होकर वर्ते और सत्संग में उसी की भक्ति उत्तम मानी जाती है–जो ऐसे मुक्तों के रंग से रंग जाए और ऐसों पर ही आप फिदा हो जाओगे। सत्संग का यह गूढ़ रहस्य आपने ही दर्शाया।

वचनामृत म. 28 में भी श्रीजी महाराज ने भक्तों की सेवा को जीवनडोरी यानि–रीढ़ की हड्डी बताया है और भक्तों के अभाव–अवगुण की टीकाचर्चा के विचारों को मरणडोरी रूप बताया है। अर्थात् यदि रीढ़ की हड्डी टूट जाए तो सांस होते हुए भी जीवन बेकार..... वैसे ही **भक्तों के अभाव-अमहिमा के चक्कर में पड़ गए तो सत्संग से-सत्पुरुष से धीरे-धीरे छूट जाएंगे-अलग हो जाएंगे.....** तो हम ऐसे भक्तों में भावफेर करके हाथ खड़े न करें ऐसा हमें बुद्धियोग देना !

हम से जाने-अनजाने में कुछ भूल चूक हो गई हो, हमारे स्वभाव, गिनतियाँ, संकुचितता का साथ देकर आप में कोई भावफेर हुआ हो, तो हे दयालु ! आज के शुभ दिन सब कुछ माफ करके आप हमारे हृदय सिंहासन पर सदैव विराजना ! हमें आपका पसंदीदा ही सहज वर्ताना..... हमें आनंद में रखना..... सच्चे सहृद्यी बनाना..... हमें निर्दोष बनाना–यही आपके श्रीचरणों में आरजू !

✡✡✡✡✡

सर्जन अनोखा देखो रे, काकाजी का.....

कोटि धन्यवाद हों श्रीजी महाराज को कि जिन्होंने मानवजाति के कल्याण के लिए मोक्ष के द्वार के रूप में गुणातीतभाव में अखंड रहते संतों की परम्परा धरती पर अखंडित रखी....... आज प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. प्रमुखस्वामी महाराज, प.पू. महंतस्वामी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामी, प.पू. साहेब द्वारा यह ज्योति जल रही है, और......

प.पू. काकाजी ने हम सब पर–खास करके उत्तर भारत के वासियों पर अनहद कृपा करके **'प.पू. गुरुजी'** भेंट स्वरूप दिए हैं। प.पू. काकाजी का यह ऋण हम कैसे चुका पाएंगे....?

यूं तो प.पू. गुरुजी जैसी विभूति के व्यक्तित्व को अपनी बुद्धि व शब्दों के ढ़ांचे में पिरोना मुश्किल ही नहीं, बल्कि साहस ही है। हाँ, भक्ति व महिमा की आँखों से जरूर उनके स्वरूप का अल्प परिचय पाया जा सकता है।

गुरुहरि योगीजी महाराज ने प.पू. गुरुजी के बारे में डायरी में आशीर्वाद रूप लिखा है कि **'मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामिजी ने जिन 200 मुक्तों को ब्रह्मविद्या पढ़ाई उनमें से तुम हो !'**

श्रीजी महाराज खुद जूनागढ़ के जमानती बने थे, वैसे प.पू. काकाजी भी दिल्ली के जमानती बने हैं ! प.पू. काकाजी कैसे विज़नरी पुरुष होंगे कि इतने सब में से उन्होंने दिल्ली के कार्य के लिए प.पू. गुरुजी जैसे पात्र को चुना.... आज दिल्ली में होते कार्य को देख कर प.पू. काकाजी के अद्भुत सामर्थ्य और पारदर्शी दृष्टि का स्पष्ट ख्याल पड़ता है।

1966 में संस्था ने हमें अलग किया और.... 1968 में प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को दिल्ली जाने का आदेश दिया। प.पू. गुरुजी जब अकेले प.पू. काकाजी के वचन से दिल्ली रहने आये होंगे-उस समय की कल्पना करें.....

कैसी गुरुभक्ति? जहां स्वामिनारायण का नाम नहीं, कोई भक्त नहीं, रहने का भी ठिकाना नहीं। यूं ही मानो कि एक तरह से परदेस में आए.... स्थूल रूप से प.पू. काकाजी का दर्शन, सेवा, समागम नहीं। लेकिन केवल गुरू वचन की ओर निगाह ! प.पू. काकाजी को ही प्रसन्न करने की एकमात्र तमन्ना ! तभी ऐसा हो सकता है..... अकेले कठिनाईयों से जूझना... पैसे की भी तंगी ! आज सुनने मात्र से हमारे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। तो, उस समय इन परिस्थितियों में से गुजरना कितना कठिन पड़ा होगा? प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती पर प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने प.पू. गुरुजी के बारे बताया था कि–महाराज के समय में जूनागढ़ में जिस प्रकार मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने सहन किया–कार्य किया, जहां सत्संग कराना खूब दुष्कर–कठिन था; उसी प्रकार प.पू. काकाजी के वचन से प.पू. गुरुजी ने दिल्ली जैसी जगह पर स्वामिनारायण धर्म का प्रचार ही नहीं किया, बल्कि निष्ठावान मुक्तों के समाज का भी सर्जन किया है। बस ! भजन व अंतर में प.पू. काकाजी की मूर्ति से पूछ कर सब करना....

कितना भरोसा होगा गुरु को अपने इस शिष्य पर ! सो, धर्म, ज्ञान, वैराग्य , भक्ति का समन्वय यानि प.पू. गुरुजी........

प.पू. गुरुजी में अनेकों को प.पू. काकाजी की ही अनुभूति हुई है। प.पू. काकाजी की कमी जब उन्होंने भक्तों को महसूस नहीं होने दी, तो आध्यात्मिक रूप से भी वे कोई कमी रहने ही नहीं देंगे–ऐसा आश्रितों का अटूट विश्वास है।

प.पू. काकाजी ने 7 मार्च 1986 को शरीर छोड़ा....... जब प.पू. काकाजी के शरीर को अंतिम संस्कार विधि करके अग्नि दे रहे थे, तभी प.पू. गुरुजी के हृदय से बहुत जोर की हृदयविदारक जो चीख निकली; उस बारे में **प.पू. पप्पाजी ने बताया था कि उसी क्षण प.पू. काकाजी को प.पू. गुरुजी में प्रवेश होते मैंने देखा !** प.पू. पप्पाजी जैसी गुणातीत विभूतियों की वाणी परम सत्यस्वरूप ही होती है।

सो ही हम सब को इस बात की मानो दृढ़ प्रतीति कराने इस बार **7 मार्च को फागुन शुक्ल 1-तिथि के मुताबिक प.पू. गुरुजी की जन्मतिथि भी आयी है...... हम सभी के लिए तो यह एक बहुत बड़ी सांकेतिक घटना है।** प.पू. काकाजी व प.पू. गुरुजी के संबंध का सबूत है।

'स्वामी की बात', प्रकरण–5 की 311 में लिखा है–'कई कहते हैं कि ये कुछ जानते नहीं व इन्हें कुछ आता नहीं। परन्तु गद्दी पर किसने बिठाया है? इस बात का उन्हें कुछ पता भी है क्या? सब कुछ जानता है, तभी गद्दी पर बिठाया है। **यह तो सत्संग में कुसंग की बात करी।**

अब मोक्ष की बात करते हैं..... प्रगट स्वरूप को एक प्रणाम करने से मोक्ष होता है। ऐसे तो करोड़ों प्रणाम किए होंगे, पर मोक्ष होने की प्रतीति नहीं हुई और शांति भी नहीं मिली। पर यदि प्रगट भगवान को जानकर व पहचान कर एक प्रणाम करें, तो भगवान के धाम में जाये और मोक्ष की प्रतीति हो व शांति भी हो।'

सो ही–गुरुहरि योगीजी महाराज का संकल्प पूरा करने **प.पू. काकाजी ने दिल्ली में प.पू. गुरुजी को बिठाया है ! तो वो उनकी पात्रता देख कर ही बिठाया होगा... प.पू. काकाजी कैसी समर्थ विभूति थी वो तो हम सभी जानते हैं। अगर हम कहते हैं कि प.पू. गुरुजी का इतना ठीक नहीं, ऐसा नहीं करना चाहिए वगैरह अभिप्राय देते हैं, तो इसका मतलब यही है कि हमने प.पू. काकाजी को ही मूलतः सही नहीं माना।**

जैसे कोई कहे कि कृष्ण को तो मैं मानता हूँ, पर गीता को नहीं मानता.... बिल्कुल ऐसी ही यह बात है। गुरुहरि योगीजी महाराज और प.पू. काकाजी अक्षरधाम के समर्थ जौहरी थे, तभी तो उनकी पारदर्शी दृष्टि ने प.पू. गुरुजी जैसे हीरे को परखा-तराशा और यह कार्यभार सौंपा होगा ना?

13 मार्च 1980 में प.पू. काकाजी ने तो प.पू. गुरुजी को आशीर्वाद देते हुए कह ही दिया था कि–

'मुकुंदजीवनस्वामी को अभी मैं स्वतंत्रता देता हूँ।'
मेरे को भी मत पूछो।
तुम्हारे हृदय में प्रभु है–अखंड है...
जैसे शास्त्री महाराज ने नंदाजी को बोला कि
जैसा मेरा भगवान सुनता है, ऐसा तुम्हारा सुनेगा.....
(यूं) आज जाहेर सभा में
तुम्हारी लायकात है–पात्रता है.....
तो, उसको भी यही केक खिलाता हूँ कि–
तुम भी जभी पोकार करेगा....
तुम्हारा भी भगवान सुनेगा.....
अब से तुम भी स्वतंत्र काम करो
हिलमिल के करो..........'

और..... जैसी अनुभूति शांति की, बल की प.पू. काकाजी के दर्शन, बातों से भक्तों को होती थी, वैसी ही आज प.पू. गुरुजी से होती है....

प.पू. काकाजी के प्रति पराभक्ति अदा करने के लिए ही प.पू. गुरुजी जीवन की सैकण्ड-सैकण्ड व्यतीत कर रहे हैं.... प.पू. काकाजी के प्रति अनन्यभक्ति..... जैसे कि **मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी** ने अपनी बातों में प्र. 5 की 147 में लिखा है कि 1859 की साल में भादो महीने में पहली बार महाराज के उन्होंने दर्शन किए। महाराज ने उनके सामने देखा और उन्होंने महाराज के सामने देखा कि इतने में तो निश्चय हो गया ! लेकिन **महाराज ने उन्हें कभी भी किसी भी तरह सम्मान नहीं दिया।**

ऐसे ही **प.पू. काकाजी ने कभी भी जाहिर में प.पू. गुरुजी की तारीफ नहीं करी....** बल्कि यदि कहा जाए तो वे **प.पू. गुरुजी व पू. बापू के लिए खूब कड़े रहे.... कई बार जाहिर सभा में पू. बापू व प.पू. गुरुजी को तो वे खूब स्पष्ट कह देते।** 26 जनवरी 1986 को विद्यानगर में भी बोले कि–मुकुंद को हेमामालिनी भी सरीखी और स्वरूप भी सरीखा !

गावं 'तेरा' में सद्गुरु **वचनामृत** की प्रतिलिपि तैयार करके महाराज के पास लाए थे। संतों ने इस ग्रंथ को कितनी सावधानी रख कर तैयार करा होगा कि–**उसमें मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी का कहीं पर नामो-निशान नहीं हो।** सद्गुरुओं ने यही समझ होगा न कि हमने ठीक ही किया है ! स्वामी और उनके सेवकों को खुश करने महाराज तो कभी कभार स्वामी की थोड़ी बढ़ाई करते हैं। और... जैसे कि आगे लिखा है–यूं भी महाराज ने स्वामी को कभी सम्मान नहीं दिया।

ऐसे ही प.पू. काकाजी अन्यों की तारीफ करते, उससे हम कईयों के दिलो-दिमाग पर ऐसा रहा कि प.पू. गुरुजी और पू. बापू की गल्तियाँ जो वे बताते–शॉर्टकमिंग्स बताते वैसा ही इनमें होगा। पर, **प.पू. काकाजी के इस चरित्र से हमने प.पू. गुरुजी व पू. बापू जैसों को अन्डरएस्टिमेट ही कर लिया। जबकि देखा जाए तो वे कैसे विश्वासपात्र होंगे कि**

जाहिर में—बड़ी सभा में भी कभी प.पू. काकाजी उन्हें कुछ भी कहने में हिचकते नहीं थे।

दरअसल तो इन्होंने प.पू. काकाजी को यह खास अधिकार-हकदावा दिया होगा... खुद को पूर्ण सौंप रखा होगा, तभी स्वरूप इतना अधिकार कर सकता है ना? सच कहें तो **सत्पुरुष का ऐसा विश्वास पाना—वही तो साधक की पूंजी होती है न ! शिष्य की साधना की पूर्णाहुति है !**

साधुता के परम आदर्श के रूप में **प.पू. गुरुजी का सहज जीवन** हम सबके लिए अपने आप में प्रेरणादायी रहा है। प.पू. काकाजी की स्मृति किए बिना वे कुछ भी नहीं करते। कोई भी क्रिया करने से पहले पलभर आँख बंद करते हैं, यह हम सभी ने देखा है। यहाँ तक कि अखबार पढ़ना हो, तब भी पहले स्मृति करके ही पढ़ेंगे। यही स्पष्ट करता है कि भले ही ऊपरी दृष्टि से वे सारे क्रियायोगों में मशगूल दिखाई पड़ते हैं, हमारे साथ रसबस होते भी दिखाई पड़ते हों, पर **भीतर में वे अखंड प.पू. काकाजी में ही पूर्णतया लय और लीन हैं....** प.पू. काकाजी की मूर्ति ही उनका प्राण है।

प.पू. गुरुजी की प्रतिभा में गुरु गुणातीत की झलक तो मिलती ही है, पर कभी-कभी तो उनके कार्य-कलाप में भी गुणातीत परंपरा की रीति, नीति व स्थिति उभर आती है। भक्तों के दुःख से दुःखी और सुख से सुखी...... कोई भी प्रॉब्लम आने पर कोई भी भक्त आधी रात को भी प.पू. गुरुजी पर हकदावा करके फोन कर सकते हैं। उन्हें हिचक नहीं होती कि प.पू. गुरुजी को कैसे जगाएँ?

सादाई, सरलता तथा सच्चाई उनके जीवन में सहज है। **निखालिस स्वभाव के साथ वे प्रभु से अटूट संबंध और उनमें अखूट श्रद्धा रखते हैं। किसी की भी मोहब्बत में फंसे बिना जो उन्हें योग्य लगे वह तीखेपन से भी कह पाते हैं।**

यूं उनकी समझदारी और सरलता दोनों का समन्वय अनोखे आनंद का अनुभव कराता है। प.पू. गुरुजी का यह अद्‌भुत व्यक्तित्व और उनकी खूब प्रेक्टीकल कार्यशैली हमेशा हर एक को सहज आकर्षित करती है।

प.पू. गुरुजी में इतना **निर्मानीभाव** है कि इन्हें खुद की ज़रा भी कान्शियसनेस नहीं..... उनके सान्निध्य में शंकाओं का समाधान होता है, दुविधाएँ दूर होती हैं। मन शांति का अनुभव करता है। उनके नाम में ही प्रभु का—श्रीकृष्ण का संगाथ है, वह कितना सूचक है? **उन्हें मिलते ही हमें प्रतीत होता है कि हम एक निखालिस, आडंबररहित व्यक्ति को मिल रहे हों !** 'ही प्रेक्टीसिस वॉट ही प्रीचीस।'

प.पू. गुरुजी की उदारता.... कुछ भी अच्छी चीज़—पेन जैसी चीज़ भेंट में आएगी, तो वह संभाल कर रखेंगे और एन मौके पर वह भक्तों को दे देंगे।

देह के प्रति लापरवाही..... बाई पास सर्जरी होने के बावजूद भी भक्तों के लिए रात-दिन देखे बिना अविरत परिश्रम चालू ही है। यह सब देख कर आँखों में पानी आ जाता है। चलेगा, जमेगा, जँचेगा, निभेगा के सूत्र को जीवन में पिरो लेने वाले निराग्रही **प.पू. गुरुजी की वाणी में कहीं उपदेश का भार नहीं,** पाखंड की छाया नहीं, शुष्कता का स्पर्श नहीं..... **केवल आनंदोब्रह्म ! ब्रह्म का लक्षण ही आनंद है।**

इन सबसे अधिक, **आज तक दिल्ली का एक भी हरिभक्त ऐसा नहीं कह सकता कि मेरे से प.पू. गुरुजी ने पैसों की यह सेवा मांगी है।** प.पू. गुरुजी के मन में बस यही तमन्ना रही है कि हमारा जीव किस प्रकार जल्दी से जल्दी सत्संगी हो। हमारे जीव की वृद्धि और शुद्धि किस प्रकार हो? यही एक तमन्ना ! उनका एक ही उद्यम दिखाई पड़ता है कि संबंध में आये हुओं को अक्षरपुरुषोत्तम की—गुणातीत स्वरूपों की सर्वोपरि निष्ठा दृढ़ हो जाए।

प.पू. गुरुजी **अत्यंत बुद्धिशाली** होते हुए भी उन्होंने 'स्व' का जो समर्पण किया, वह खूब कठिन है। इन्होंने अपने जीवन में पदार्थ, शिष्य, प्रशंसा, धन इत्यादि की सहज भी अपेक्षा नहीं रखी..... बिल्कुल, शुद्ध और निर्भीक, स्पष्टवक्ता। व्यावहारिक और आध्यात्मिक रहस्यों को प.पू. गुरुजी कभी-गंभीरता से, कभी विनोद से, तो कभी कड़े होकर भी समझते हैं; लेकिन, फिर भी इन सबके पीछे उनके दिल में सदैव प्रेम व हित की ही एकमात्र भावना छुपी रहती है....

कभी-कभी तो प.पू. गुरुजी में **छोटे बच्चे जैसी निर्दोषता** का दर्शन भी होता है। 1997, 2 फरवरी को प.पू. गुरुजी की हीरक जयंती मनाई थी, तब प.पू. गुरुजी एक छोटे बच्चे की भांति स्टेज पर अपने आसन पर विराजमान रहते हुए काजू खा रहे थे। सभी निजी हरिभक्त यह देख कर विचार कर रहे थे कि जिसे खुद के स्टेटस की तनिक भी—ज़रा भी कान्शियसनेस ना हो वही तो ऐसा कर सकता है ना ! यह विचार ही नहीं आता होगा न कि कोई मेरे बारे में क्या सोचेगा?

प.पू. काकाजी की हीरक जयंती जब 1978—मुंबई में मनाई, तब प.पू. काकाजी खुद करताल लेकर नाचे थे। सामान्य लोगों की बुद्धि से खूब परे की यह बात है। या तो **कोई पागल ही ऐसा कर सकता है या कोई सच में भगवानधारक विभूति ही ऐसा कर सकती है।** लोगों को जो सोचना हो वो भले सोचें, पर ऐसे स्वरूप असल में **मुक्तों को स्मृति देने** ही ऐसा चरित्र अपनाते हैं। **आज भी प.पू. काकाजी का करताल लेकर यूं**

झूमना–भक्तों की चित्तपट्टी पर ताज़ी दृढ़ स्मृति करा कर आँखों में पानी ला देता है... हृदय में उमंग और उत्साह भर देता है।

भक्तों के प्रति **प.पू. गुरुजी की आत्मीयता** के बारे क्या कहें? प्रसंग खूब छोटा ही है, लेकिन मार्मिकता दर्शाता है। प.पू. काकाजी के समय से जुड़े हमारे पुराने जोगी प.भ. विजयबाबु की लड़की की 1 दिसम्बर 1999 को शादी थी। तो, प.पू. गुरुजी ने खास फोन करके उन्हें पूछा कि–'बेटी की शादी है, तो यदि कोई जरूरत हो तो मुझे बताना।' आज के जमाने में सगे-संबंधी भी शायद पूछने नहीं आएंगे और पूछेंगे तो वह भी ऊपरी तौर पर। लेकिन साधु को कोई स्वार्थ नहीं होता और तभी तो उनकी बातों में से अपनापन झलकता है। इसलिए प.पू. गुरुजी से बात सुन कर प.भ. विजय बाबु एवं परिवार खूब गिलगिला भी हो गया कि ओहो, हमारे लिए ऐसी चिंता करने वाले कैसे !

भक्तों के जीवन में आज **उनके संबंध** से ऐसी **निश्चिंतता** भी आई है कि चाहे कुछ भी हो जाए, पर हमारे लिए गुरुजी बैठे हैं। हमारा कोई कुछ बिगाड़ नहीं पाएगा।

अर्जुन का प्रसंग तो हमने सुना है। जब कौरव पक्ष में दुर्योधन के अत्यधिक आग्रह पर भीष्म पितामह ने सूर्यास्त होने तक में 'अर्जुन वध' की प्रतिज्ञा ली, तब पांडव पक्ष में सभी खूब चिन्तित हो उठे...... भगवान कृष्ण भी मनुष्य चरित्र करते हुए अर्जुन को ढूंढते-ढूंढते पाण्डवों के खेमे में पहुँचे। सभी पांडव अत्यधिक चिन्ता में डूबे हुए–उदास बैठे थे। सभी के मन में ऐसा ही था कि अर्जुन किसी कोने में उदास बैठा–कल के बारे चिन्तित होगा। भीष्म प्रतिज्ञा की दृढ़ता व शक्ति से पांडव यूं भी भलीभाँति परिचित थे। भगवान कृष्ण जब अर्जुन को ढूंढते हुए उसके पास पहुँचते हैं, तो अर्जुन आराम से सोया हुआ मिलता है। भगवान कृष्ण उसे जगाते हैं और पूछते हैं कि तुम्हें भीष्म प्रतिज्ञा के बारे में पता है ? तो अर्जुन निश्चिंतता से कहता है कि–हाँ पता है ! तो कृष्ण पूछते हैं कि–फिर भी तुम आराम से कैसे सो रहे हो? अर्जुन खूब मार्मिक प्रत्युत्तर देता है कि–भगवन् ! आप जब जाग रहे हो, सो फिर मुझे निश्चिंतता से सोना ही है ना !

ये बातें हमने सुनी थी। पर, आज भक्तों के जीवन में प.पू. गुरुजी के संबंध से जब ऐसी निर्भयता-निश्चिंतता दिखती है, तो भगवान और भक्त की आपस की आत्मीयता का सहज दर्शन होता है।

प.भ. विजय अग्रवालजी के घर अबकी 26 जनवरी को करीब 200 हरिभक्तों की सभा का प्रोग्राम था। 25 जनवरी दोपहर के बाद अचानक तेज़ आंधी व बरसात होने से मौसम खराब हो गया...... लेकिन प.पू. गुरुजी ने विजय अग्रवालजी को फोन करके कहा कि आगे-पीछे भले ही मौसम कैसा भी रहे, पर कल मौसम बिल्कुल ठीक हो जायेगा। आप चिंता नहीं करना।

26 जनवरी की सुबह 5.00 बजे प.पू. गुरुजी स्वयं उठकर मौसम देखने बाहर निकले। तब भी बरसात चालू ही थी ! लेकिन तकरीबन 7.30 बजे तक मौसम साफ हो गया और धूप भी निकल आई। 10.00 बजे उनके यहाँ सभी हरिभक्त व प.पू. गुरुजी सभा के लिए पहुँच गए। सभा के अंत में प.भ. विजय अग्रवालजी ने जब बात करी तो उन्होंने यही कहा कि–

'मुझे बारिश की क्या चिंता करनी थी? चिंता करने वाले तो गुरुजी बैठे हैं। उन्होंने ही सारी व्यवस्था–सभा करनी थी।'

इस बात से वह अर्जुन वाला प्रसंग चित्तपट्टी पर सहज उभर आया.....

प.पू. गुरुजी की खूब महिमाभरी दृष्टि..... छोटे से छोटे मुक्त का भी वे गुण लेते हैं। मंदिर में 'निश्चय' और 'रुपित' नाम के दो छोटे बच्चे आते हैं। वे इतने भाव से ठाकुरजी को दण्डवत् करते हैं कि वह देख कर प.पू. गुरुजी ने सभी को बताया कि–दण्डवत् इन बच्चों की तरह करना चाहिए।

यूं व्यावहारिक और आध्यात्मिक महिमा का स्त्रोत यानि–प.पू. गुरुजी ! संबंध वालों की महिमा ऐसी कि वह देख कर हमारी बुद्धि विराम को पा जाए।

जो उनके साथ चालाकी खेलें,
जो उनकी आज्ञा में न रहें,
जिसकी निष्ठा भी हमें दिखाई न पड़े,
जो पीछे से उनके बारे में ही नापातोली करते हों–

उनके लिए भी उनकी वैसी ही बहती महिमा की धारा देखकर हर एक के मन में होता ही है कि यह विभूति कोई अलग है। उन्होंने भक्तों के आगे अपना कुछ भी प्यारा नहीं रखा। करोड़ों माँ का प्यार भी फीका पड़े ऐसा उनका जीवन देख कर सहज ही भगवान के अल्प संबंध वालों के साथ भी कैसे जीना–वह प्रेरणा, मार्गदर्शन मिलता है।

कभी-कभी खूब आश्चर्य होता है कि **अपनी गल्ती का खुली सभा में वे इकरार भी कर लेते हैं।** हम से कोई भूल हो जाए, तो हम किसी भी तरह उसे ढकने का, छिपाने का पूरा प्रयास करते हैं। कई बचाव करते हैं। लेकिन प.पू. गुरुजी असल में हमें अपने वर्तन से सिखाते हैं कि **सच्चा बड़प्पन अपनी भूल को स्वीकार कर, स्वयं को बदलने में ही निहित है।** तभी प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी ने तो प.पू. गुरुजी के बारे कहा है कि वे तो अंतःर्दृष्टि के राजा हैं।

एक बार प.पू. काकाजी के कहने के मुताबिक प.पू. गुरुजी

पंजाब से दिल्ली टाईम पर नहीं पहुँच पाए। तो, प.पू. काकाजी ने कड़े शब्दों में कहा कि ऐसी महाभयंकर भूल दोबारा नहीं करना.... और मुंबई से इस बारे पत्र भी लिखा–जो कि 'ब्रह्मप्रवाह' पुस्तक में सम्मिलित है। प.पू. गुरुजी ने उस पत्र में इस पंक्ति के आगे लिख कर रखा है कि–ऐसी भूल अब प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी जैसों के पास ना हो। **कैसी जाग्रतता और सर्वदेशियता !** इस बात से स्पष्ट पता चलता है कि **गुरुहरि के स्थान पर उन्हें प.पू. काकाजी जरूर थे, परन्तु साथोसाथ प.पू. गुरुजी को प.पू. पप्पाजी व प.पू. स्वामिजी की भी ऐसी ही महिमा है।**

अपने **सर्वदेशियता** के गुण से प.पू. गुरुजी आज सभी स्वरूपों के दिल में बसे हैं। प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब की आँखों से प.पू. गुरुजी पर उनकी प्रसन्नता दिखाई पड़ती है। तब सहज ही भीतर में होता है कि–जीवन जिया तो इसे ही कहा जाए ! सच्चे अर्थ में गुरु का सेवन किया भी इसे ही कहा जाए....

प.पू. गुरुजी ने एक बार **'भुलके'** की परिभाषा बताई थी कि–**भुलका यानि–जो हर एक की गोद में सहज जाए–खेले और जिसे देख कर हर एक को उसे खिलाने का मन सहज हो जाए....**

प.पू. गुरुजी का आंतर व बाहरी जीवन दोनों ही खूब निखालस हैं। **तनिक भी डीप्लोमसी नहीं !** सो ही–किसी भी बनावट–दंभ भी उनसे सहन नहीं होता, और... तब उसका दुःख उनके मुखमंडल पर उभर आता है; क्योंकि वे खुद कभी किसी से प्रपंच नहीं, खेलते। **चाहे हमें थोड़ी देर के लिए चुभ भी जाए, पर** जैसे माँ बच्चे की नाक बंद करके भी उसकी भलाई के लिए कड़वी दवाई पिला देती है, वैसे **सचोट मार्गदर्शन देने में वे कभी नहीं हिचकते......**

जहाँ सरलता व निखालिसता होती है वहां निर्मानीभाव अपने आप होता है। 'स्व' की ज़रा-भी कान्शियसनेस नहीं कि वे गुरु या महंत के स्थान पर हैं। कोई भी आए उसके बैठने के लिए वे तुरन्त अपना सोफा खाली कर देंगे।

सब के साथ आत्मीयता से रसबस हो जाते हैं। उनके संबंध में जो भी आता है, उसे महसूस ही नहीं होने देते कि प.पू. गुरुजी बहुत बड़े हैं। बालक, युवान, वृद्ध सभी को प.पू. गुरुजी अपने लगते हैं......

उनके निर्व्याज वात्सल्य में हर एक खुद को भीगा-भीगा महसूस करता है। **एक कुटुंबीजन जितना स्नेह और प्रेम उनके पास से पाता है।** और..... **उनका जगत् क्लब, शौक, थियेटर, घूमना–फिरना सब बिना कहे-करे अपने आप छूटता जाता है।** जीवन का केन्द्र प.पू. गुरुजी ही बन जाते हैं। प्रभु के वो अलौकिक सुख का एहसास ही– यानि कि प.पू. गुरुजी की निर्दोष, पवित्र मूर्ति विषयों के सुख को गौण कर देती है। जो सुख ढूंढने भीतर में एक उद्वेग लेकर हम जगत में इधर-उधर भागते रहते हैं, उससे अनंत गुना सुख प.पू. गुरुजी की मूर्ति का है। जीव को वह शाश्वत् शांति, स्थिरता, समता, निश्चिंतता देता है। उनकी निर्गुण मूर्ति के दर्शनमात्र से ही जीवन की कई दुविधाएं, मानसिक अशांति, उलझनें सब शांत हो जाती है। हम चाहे घर से, जगत से, रिश्तेदारी से कितने भी ऑपसेट होकर आए हों, लेकिन उनकी वह मूर्ति हमारे सारे विचारों को शांत कर देती है। जैसे सूर्य के उगते ही अंधेरा अपने आप चला जाता है... यूं **संबंध में आये भक्तों के जीवन में प.पू. गुरुजी प्रभु बसाने का भगीरथ कार्य कर रहे हैं।**

प.पू. गुरुजी की कथावार्ता, से एक ओर गृहस्थों को व्यावहारिक समाधान मिलते हैं, तो दूसरी ओर कथावार्ता में वे बहुत बारीक-बारीक, नई-नई चीज़ें खोल-खोल कर समझते हैं, जिससे साधकों का साधना मार्ग सरल व सुगम बन जाता है। साधकों की गाड़ी जहां अटकी हो, वहाँ से आगे जाने की सूझ, प्रेरणा, बल मिलता है। अपने खुद के प्रसंगों-भूलों को भी बता कर हमें जाग्रत करते हैं, ताकि हमारा समय न बिगड़े। खूब धीरज और श्रद्धा से प.पू. गुरुजी ने भक्तों की आध्यात्मिक ज्योति को जलते रखा है, जिससे भक्त उस ज्योति के प्रकाश में खुद के मार्ग पर चल सके हैं.....

कभी किसी की उदासी मात्र का पता चले, तो जब तक उसे हताशा-निराशा से वापिस आनंद में नहीं पल्टा देते, तब तक उन्हें चैन नहीं आता।

किसी के भी बारे, अरे ! किसी छोटे बच्चे के बारे भी प.पू. गुरुजी को पता चल जाए कि उसे यह पसंद है; मानो किसी को काजू पसंद हो, तो वे फिर उससे उसे खुश करने ही लग पड़ेंगे.... वह चीज़ वे कहीं भी देखेंगे तो याद रख कर लें आएंगे.. आखिर फिर, बहुत दे देकर उसमें से उसका राग ही जड़ से निकाल देंगे और प्रभु में जोड़ देंगे.....

कई बार उनका यह जेस्चर देख कर रोना निकल आता है कि–आपको केवल हमारी पसंद का एक बार पता चले, तो आप लग पड़ते हो.... जबकि हमें खूब ठीक से पता है कि आपको मैत्रीभाव, संबंध से ही जीना, निर्दोषबुद्धि, एकता, रेग्युलर तीव्र भजन करना खूब पसंद है, पर हम वो आपको प्रसन्न करने नहीं करते–कैसी हमारी जड़ता?

प.पू. गुरुजी को समूह में ही रहना पसंद है। खुद की कोई प्रायवेसी ही नहीं। हमेशा हॉल में ही सोयेंगे, लेकिन हम...? कोई बरकत नहीं फिर भी बस अपने ढाँचे के मुताबिक

चलते हैं। शायद यूं कहें कि हमारे में उन्हें महिमा की दृष्टि से निहारने के चक्षु नहीं हैं–कैसी विडम्बना?

तो, गुरुहरि शास्त्रीजी महाराज व गुरुवर्य योगीजी महाराज के अविरत परिश्रम से अक्षरपुरुषोत्तम की सर्वोपरि शुद्ध उपासना की स्थापना हुई.... प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, प.पू. साहेब के अविरत परिश्रम से संतों, बहनों, युवकों, गृहस्थों का सुहृद् समाज साकार हो उठा। धरती पर एकांतिक धर्म की स्थापना हो चुकी। प्रभु का होकर, प्रभु को ही प्रसन्न करने की एकमात्र भावना वाला भव्य, निश्चिंत और निर्भय समाज आज साकार हो उठा। 'कौटुम्बिक भावना' वाला समाज जो महाराज स्थापित करना चाहते थे..... ऐसा निष्ठावाला–भक्तों के लिए अत्यधिक प्रीति से मर मिटने वाला एक छोटा समाज दिल्ली की धरती पर भी आज प.पू. काकाजी ने प.पू. गुरुजी को निमित्त बना कर सर्जा है।

और.... हम एक रुचि वाले यानि–प.पू. काकाजी के कहे जाते हैं वे सब–उनकी अनुवृत्ति के मुताबिक जीवन जीने शुद्धभाव से प्रयत्न करते हैं, तो उसके फलस्वरूप गुरुहरि की कृपा होने से–**आध्यात्मिक भूमिका में ही हमें अखंड रहना है–**यह उनके अंतर का रहस्य हमें समझ आया।

उससे सहज ही महाविष्णुरूप और ब्रह्मरूप ऐसा दर्पण समान यह सत्संग में बाहर का, सत्संग का और अंतर के कुसंग को आसानी से पार कर गये। लेकिन महाकारण के भावों में से गुज़र कर मुक्तों की माया से रक्षा पाने का मौका प.पू. गुरुदेव ने अब अनहद् कृपा से दिया है। सो–अब मूर्ति सिद्ध करके दुर्लभ से दुर्लभ एकान्तिकभाव सिद्ध हो जाए; इस हेतु मीलेनियम में स्वामिश्रीजी, अ.म.मु. गोपाळानन्दस्वामी, पू. भगतजी महाराज, पू. जागास्वामी, पू. कृष्णजी अदा, पू. पूंजाजी बापू, गुरुवर्य ब्र.स्व. शास्त्रीजी महाराज, ब्र.स्व. योगीजी महाराज, गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज तथा सभी गुणातीत स्वरूपों को यही नम्र प्रार्थना कि हम सभी को ऐसा **'साधु का ज्ञान'** सरलता से सिद्ध हो जाए।

महाराज के समय में **परमहंसों ने अथाह परिश्रम करके इन्द्रियों–अंतःकरण के चिथड़े कर डाले,** लेकिन कईयों को **गुणातीत पुरुष को पहचानने की,** देह से अलग अपनी आत्मा रूप से वर्तने की और **ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म में जुड़ कर स्वामीसेवकभाव से सर्वावतारी पुरुषोत्तमनारायण की प्रगट उपासना करने की, अक्षरमत की अनोखी नीति यथार्थ समझ नहीं आई।**

तब ही तो ऐसे मुक्तों में से प्रगट के सर्वोपरिभाव का रहस्य प्रगट हो नहीं सका। महाराज ने 'सत्संगी जीवन' में जैसे चला लिया और शुकमुनि जैसे की बात उन्हें मान्य रखनी पड़ी। पर, मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने बाद में मुक्तों की माया को कला से जीत कर 'हरिलीला कल्पतरु' तैयार कराया। ऐसे ही–मूल अक्षरब्रह्म तथा अनादि महामुक्त गोपाळानंदस्वामी की बातों का रहस्य भी तत्कालीन मुक्त यथार्थ नहीं समझ सके। तभी तो, सच्चिदानन्दस्वामी जैसे महाप्रेमी भी कहते कि–'गोपालीया ज्ञान–कोई सुनना नहीं।'

यूं सांख्य और योग में सिद्ध होने के बावजूद कई मुक्त महाराज की सर्वोपरिता जीतेजी दृढ़ नहीं कर सके। **कहीं न कहीं ऐसा मनुष्यभाव रह जाने के कारण एकान्तिकभाव में खोट रह गई।** बड़े पुरुषों को मोहताज़ बना कर, संकल्प सिद्ध कराए–सुख लिया; लेकिन **ब्राह्मीस्थिति कर लेने का अनुपम मौका चूक ही गये, जो कि गुणातीत पुरुष को सम्यक् प्रकार से पहचानने वाले महामुक्त भगतजी महाराज और जागास्वामी के हिस्से आया !**

अभी भी **परोक्ष जैसी ही प्रत्यक्ष में प्रतीति न होने के कारण** हम बड़े पुरुष के पास हम हमारे संकल्प सिद्ध कराते होंगे–मोहताज़ बनाते होंगे, हमारी मान्यताओं तथा ग्रंथियों को चालाकी–प्रयुक्ति से आगे करके उसके लिए उनसे बल लेते रहते होंगे, उसके लिए उनसे आशीर्वाद लिखवाते रहते होंगे।

ऐसा मन का कपट हमें बाधारूप ना हो और दूसरों को समझ देकर सत्संग कराने के बजाय हमारा ही जीव सत्संगी हो और ब्रह्मरूप होकर परब्रह्म में जुड़ सकें–यही सर्वोत्तम कार्य कर लेना है।

जहां, हमें एक बिलांद भी दिखाई न पड़ता हो–पतंगे की भाँति सूर्य के अभिप्राय की जड़ से खबर भी ना हो, वहाँ सात्विक भावना की आड़ में बड़े पुरुष के अभिप्राय की अवगणना करके खोटे अभिनिवेश में लग पड़े, तब सच में हमारी विवेकबुद्धि नष्ट हो गई दिखाई पड़ती है। वैसे तो, **प्रत्यक्ष स्वरूप की तत्त्व से पहचान के सिवा उनके छोटे-बड़े चरित्रों में हमेशा बड़ों-बड़ों को भी शंका-आशंका रहने की संभावना रहती है। कमजोरों को संभालने की और अपने आपको सयाने समझने वालों का सहने की उनकी कला–सामर्थी हमारी कल्पना से परे की है।**

ऐसे भक्त में ही निर्दोषबुद्धि की और प्रगट की निष्ठा की सच्ची कसौटी होती है और इसी में से, सोच समझ कर–विवेक दृष्टि रख कर हम सभी को पास होना ही है।

स्वामी की बातों में लिखा है कि जिसे सिर्फ भगवान मिले, उसका एक पांव अक्षरधाम में है, लेकिन जिसे भगवान और संत दोनों मिले उसके दोनों पांव अक्षरधाम में होते हैं.... हमें गुरुहरि **प.पू. काकाजी के रूप में प्रभु** साक्षात् मिले और उनकी पहचान कराने वाले **प.पू. गुरुजी के रूप में संत** मिले.... तो, हमारे तो दोनों पांव अक्षरधाम में ही हैं.......

अतिशय दयालु–अतिशय गरजु, अनंत एश्वर्य के मालिक, प्रकृति पुरुष से पर, लेकिन जीवनशैली अत्यंत सामान्य पुरुष की तरह...... **प्रभुता और साधुता का अद्‌भुत समन्वय स्वरूप हे गुरुजी !** आप हमारे भीतर में उठते छोटे से छोटे विचार के भी साक्षी हैं। ऐसी अनुभूति आपने कई बार करवाई है। तो, हर पल आप हमारे साथ ही हो और हर एक क्रिया के आप साक्षी हो ऐसी दृढ़ता हमारे जीव में बैठ जाए। हर एक क्रिया आपकी ही स्मृति में रह कर करते हो जाएं और प.पू. काकाजी का संकल्प साकार करें।

तो, हे गुरुजी ! हमारा सर्वस्व आप ही हो और अखंड आप ही रह कर हमारा आसरा, सत्य, सच्चा और प्रमाणिक बने व आपकी अनुवृत्ति सहज ही समझ आती जाए तथा वैसा दिव्य जीवन जी पायें ऐसे अंतर से आशीर्वाद देना यही प्रार्थना !

अधिक और कुछ हो पाये या ना हो पाये, पर आपकी 'हां से हां' और 'ना से ना' व सेवा एवं मूर्ति की स्मृति करके भीतर में अखंड स्वामिनारायण-स्वामिनारायण भजन करते हम हो जाएं.....

साक्षात् मूर्तिमान ब्रह्म–प.पू. काकाजी हमें मिले, उनके साथ हम रहे–करे, लेकिन सही अर्थ में उनको पहचाना नहींङ्क उनकी यथार्थ महिमा को जान नहीं सके और तब भी वे हमारे ही प्रारब्ध और प्रकृति को इस्तेमाल करके प्रसंग खड़े करके आज हमारा शुद्धिकरण कर रहे हैं। तब, संत के वचन को बाह्यदृष्टि से न निहार कर अंतदृष्टि करके केवल-केवल अपने ही दोष देख कर, कबूल करके भजन का उपाय लेते हो जाएं और प.पू. काकाजी के साथ करी वे भूलें अब प.पू. गुरुजी जो कि हमारे लिए प.पू. काकाजी का ही प्रतीक रूप हैं, उनके साथ न करें–ऐसी उनकी जयंती निमित्त प्रार्थना !

✡✡✡✡✡

अनादि महामुक्त प्रागजी भक्त का प्रागट्य दिन.....

अहो ! होली का मंगलकारी दिन भी आ रहा है..... और साथ ही गुणातीत को सांगोपांग प्रगटाई हुई विभूति अनादि महामुक्त भगतजी महाराज का प्रागट्य दिन..... संवत् 1885 की फागुन शुक्ल पूर्णिमा के दिन भावनगर के महुवा गांव में इस महामुक्त ने श्री गोविन्दभाई एवं रूपाबा के घर जन्म लिया और प्रागजी नाम पाया।

संवत् 1895 में पीठवडी गांव में बाल प्रागजी भक्त और सद्. गोपाळानंदस्वामी की प्रथम भेंट हुई, तब उन्हें देखते ही स्वामिजी ने कहा–'यह तो पूर्व का भक्त है।'

लगातार तेरह वर्ष तक सद्. गोपाळानंदस्वामिजी की सेवा-समागम का लाभ लिया और सद्. गोपाळानंदस्वामी ने अंतिम आशिष देते हुए प्रागजी भक्त को कहा–'प्रागजी ! तुम जूनागढ़ जाना; मैंने तुम्हें जो-जो आशीर्वाद दिये हैं, वे सभी वहाँ सद्. गुणातीतानंदस्वामी पूरे करेंगे।

जूनागढ़ पहुँचने पर गुणातीत ज्ञान पाने की उनकी अत्यधिक गरज-लगनी और पात्रता देखकर सद्. गुणातीतानंदस्वामी बोल उठे कि–'प्रागजी ! तूं मरजीवा हो पाये और निवृत्ति लेकर मेरे पास रह कर देह और मन को चूर-चूर करके जिये तो तुझे गुणातीत ज्ञान प्राप्त करा दूँ।'

प्रागजी भक्त तो दिन-रात देखे बिना, देह को गिने बिना स्वामिजी की आज्ञा में लग पड़े। भगतजी महाराज की सेवा, साधना से प्रसन्न होकर सद्. गुणातीतानंदस्वामी ने उन्हें वरदान माँगने के लिए कहा; तब **भगतजी** ने याचना करी–'**स्वामी ! यदि आप सच में प्रसन्न हुए हो तो मुझे आपका ज्ञान दो, आपके धाम का दर्शन कराओ और मेरे जीव को सत्संगी बनाओ।'** भगतजी महाराज की यह प्रार्थना सुनकर स्वामिजी भीतर से प्रसन्न हो गए और जो ब्रह्मज्ञान जो कि किसी ब्राह्मण, विद्वान् या पंडितों में शोभा दे एक साधारण दर्जी–वह प्रागजी भक्त को मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी ने बख्शिश दिया। और....

तभी तो 'गणोद' गांव के अभयसिंह बापु बोल उठे कि–स्वामिजी ने तो 'केक्टस में केले उगाए।' उनके मन का संशय दूर करते हुए स्वामिजी बोले–'भगतजी ने तो हमारी अनुवृत्ति जान कर देह और मन को चूर-चूर कर दिया है। इसलिए मुझ से तो ''हाथ छुटी बला'' जैसा हुआ, यानि–मैं इतना फिदा हो गया कि मेरे हाथ से आशीर्वाद फिसल गए और भगतजी ब्रह्मविद्या के वाहक बन गए।'

भगतजी महाराज मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की अत्यधिक महिमा गाते..... उसके कारण कई उनसे द्वेष करते और भगतजी महाराज की बढ़ती कीर्ति भी कईयों से सहन नहीं हुई; सो–जूनागढ़ के भंडारी साधु कुंजविहारीदास ने भगतजी महाराज को लड्डू में अतिशय तीव्र ज़हर दे दिया। उसका असर होने से भगतजी के सारे शरीर में फफोले निकले, शरीर की त्वचा उखड़ गई और वे खाने–करने भी असमर्थ हो गये। फिर स्वयं श्रीजी महाराज ने दर्शन दिये और भगतजी को खुद की गोद में सुला कर सारे शरीर पर हाथ फेर कर उपाय बताया कि–'दो महीने तक एक सेर उड़द की दाल उबाल कर उसके पानी में दो रुपये भार घी मिला कर वह

पानी पीना।' श्रीहरि के आशीर्वाद से ज़हर का असर उतर गया, भगतजी की रक्षा हो गई !

ज़हर से छुटकारा नहीं हुआ, तो अनादि मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंदस्वामी की महिमा गाते भगतजी महाराज को पवित्रानंदस्वामी ने द्वेषभाव से विमुख करवाने की प्रतिज्ञा ली ! तब भी भगतजी महाराज ने **मस्ती से कहा—'एक बार पारसमणि का स्पर्श पाया हुआ सोना दोबारा पारसमणि से भी लोहा नहीं हो सकता। यूं मुझ से अलग श्रीहरि और मैं श्रीहरि से विमुख हो ही नहीं सकता !'**

अनादि मुक्त प्रागजी भक्त की वाणी, वर्तन में कितनी दृढ़ता ! उनके प्रसंग पढ़े तो स्पष्ट पता चलता है कि मू.अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी को प्रसन्न करने उन्होंने अपनी देह को—मन को कभी नहीं गिना.... ऐसी परंपरा के वारिसदार हमें मिले और उनका हमें जोग हुआ। तो, आइये ! प्रागजी भक्त के प्रागट्य दिन पर उनसे प्रेरणा लेकर हम भी अतिशय बड़े पुरुषों को—विभूतियों को प्रसन्न करने कृतनिश्चयी हों......

✡✡✡✡✡

माहात्म्य सम्राट प.पू. साहेब की जयंती का अवसर

होली का परम पवित्र दिन अनादि महामुक्त प्रागजी भक्त का प्रागट्य दिन, तो—धुलेटी प्र.ब्र.स्व. प.पू. साहेब का प्रागट्य दिन ! यूं यह तो शुभ-मंगल दिनों की श्रृंखला-सी बन गई। धुलेटी अर्थात्—रंगों का त्याहौर..... इसी दिन हम सब के जीवन में भक्ति—प्रगट प्रभु का रंग भरने प.पू. साहेब का प्रागट्य होना—कैसा सांकेतिक !

प.पू. बापा कहते—'युवकों तो मेरा हृदय हैं.......' प.पू. साहेब गुरुहरि योगीजी महाराज के इस अभिप्राय को झेल कर सच में बापा के हृदय बने। **प.पू. साहेब को गुरुहरि योगीजी महाराज ने स्वयं की कल्याण योजना के भागीदार के रूप में बताया है।** और.... प.पू. साहेब आज अनेकों के जीवनप्राण भी बने हैं, जैसे गुरुहरि योगीजी महाराज का ही कार्य करने धरती पर पधारे हों। प.पू. बापा को टोटल समर्पित ही हो गए।

गुरुहरि योगीजी महाराज की छोटी से छोटी आज्ञा-वचन भी उन्होंने अध्धर झेला...... प.पू. साहेब हॉस्टल में पढ़ते थे, तब प.पू. बापा ने उन्हें युवकों की सभा करने कहा.... तब हॉस्टल में कईयों को स्वामिनारायण धर्म या प.पू. बापा के प्रति श्रद्धा नहीं थी.... प.पू. साहेब अकेले ही थे। कोई और साथी नहीं, पर प.पू. साहेब तो प.पू. बापा का वचन झेलने एक कमरे में अकेले भी श्रीजी महाराज और प.पू. बापा की मूर्ति रखकर ज्योत जला कर धून्य करने बैठ जाते... पहले से ही अत्यधिक प्रीति-श्रद्धा व विश्वास.... और इसी के फलस्वरूप प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी व प.पू. बा की प्रेरणा लेकर आठ भाईयों द्वारा शुरू किया **'अनुपम मिशन'** आज वटवृक्ष के रूप में पूर्णरूप में विकसित हुआ है।

प.पू. साहेब ने सभी गुणातीत स्वरूपों में प.पू. बापा का भाव रख कर सेवन किया। जैसे बाहर से हैं, वैसे अन्दर से हैं। अपना वर्तन ही बातें करेगा—यह सूत्र प.पू. साहेब के जीवन में चरितार्थ हुआ है। अपने वर्तन से बातें करके प्रभु के संदेश को व्यापक बनाने प.पू. साहेब के मुख का निर्दोष हास्य सभी को सहज आकर्षित करता है और वही आकर्षण प्रभु की राह पर चलने अग्रसर कर देता है।

प.पू. पप्पाजी कई बार कहते हैं कि हमारे प्रभु कृपा साध्य हैं और सो ही—हमें ऐसे स्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज ने भेंट में दिए। उससे भी अधिक उनकी पहचान करा दी—वो जीवन की बहुत बड़ी घटना है।

मन-बुद्धि की भूमिका से परे जाकर प.पू. बापा के अन्तर का अभिप्राय जान कर प.पू. साहेब ने युवकों की सेवा की—बागडोर संभाली !

आज जो कोई भी प.पू. साहेब के संबंध में आता है, उसे प्रभु रस का ऐसा स्वाद चखा देते हैं कि वो जीव प्रभु की भक्ति की ओर दौड़ने लगता है।

जगत के सुखों को—विषयों को ठुकरा कर एक दिव्य जीवन जीने ब्रह्मज्योति में रह रहे कई कर्मयोगी युवक आज प.पू. साहेब की निश्रा स्वीकार कर, प.पू. साहेब में विश्वास और भक्तिभाव से जुड़ कर गुरुहरि योगीजी महाराज के कार्य को आगे बढ़ा रहे हैं। आज के युग में युवकों की जगत में क्या दशा है, उससे हम तनिक भी अनभिज्ञ तो नहीं हैं। सो, प.पू. साहेब तो युवा समाज का श्वास हैं—गुणातीत समाज में आज अनेकों के कल्याणदाता बने हैं। **सहजता और सरलता का सम्यक् दर्शन प.पू. साहेब में हर एक को होता है।**

एक बार दिल्ली मंदिर में प.पू. साहेब आए हुए थे। सुबह के समय प.पू. साहेब प.पू. गुरुजी के रूम में बैठे थे। प.पू. गुरुजी ने प.पू. साहेब को कुछ मेसेज देने दरवाजा खोला, तो वे एक छोटे बच्चे की अदा से तकिए पर हाथ मार-मार कर खूब भावुक होकर एकदम लीन होकर भजन कर रहे थे। प.पू. गुरुजी को प.पू. साहेब की वह मूर्ति भीतर तक स्पर्श कर गई कि ओहो ! **अनेकों के जीवन प्राण होते हुए भी प.पू. साहेब का प्रभु के पास कैसे स्वामी सेवकभाव का दर्शन !**

प्रभुधारक ऐसे प.पू. साहेब के जीवन की विशेषताएं लेखनी से कैसे व्यक्त करें? प.पू. साहेब अर्थात्–सरल बन कर पहले प्रभु के बनो, हर प्रसंग पर भजन का ही बल लेकर–मिलजुल कर सेवा किया करो। संबंध वालों की महिमा ही गाया करो। तभी तो **उनकी माहात्म्यभरी बलभरी वाणी सभी को सहज ही प्रभावित करती है।**

1985 में दिल्ली मंदिर की जमीन के लिए प.पू. गुरुजी खूब भागदौड़ कर रहे थे। तभी जमीन ऍलोट करने के उपलक्ष्य में डी.डी.ए. के वाइस चेयरमेन श्री प्रेमकुमार साहेब से मुलाकात हुई। उनको प.पू. गुरुजी ने मंदिर आने का आग्रह किया। तो उन्होंने कहा कि सिर्फ दो मिनिट के लिए मैं मंदिर आऊँगा। उन्हीं दिनों प.पू. पप्पाजी व प.पू. साहेब मुक्तों को लेकर दिल्ली आए हुए थे और उन्हें आगे भी जाना था। लेकिन जब प.पू. गुरुजी ने बताया कि ऐसे-ऐसे डी.डी.ए. के वाईस चेयरमेन आने वाले हैं, तो प.पू. पप्पाजी व प.पू. साहेब ने अपना प्रोग्राम बदल दिया और दिल्ली ही रुक गए। श्री प्रेम कुमार साहेब सिर्फ दो मिनिट का कह कर आए थे, लेकिन प.पू. पप्पाजी व प.पू. साहेब ने स्वामिनारायण धर्म व संतों की जीवन में अनिवार्यता की जो बातें करी, उससे वे इतने प्रभावित हो गए कि करीब डेढ़ घंटा वे बैठ कर गए और तत्पश्चात् दिल्ली मंदिर के लिये जमीन भी एलॉट कर दी।

आप सभी गुणातीत स्वरूपों की एक ही चाहना है कि–आपके संबंध में आए हुए हम सभी जीतेजी अक्षरधाम का सुख भोगते हो जाएं। **अ.म.मु. भगतजी महाराज** ने जैसे कहा है कि–

'विषय से दूर रहकर अखंड भजन करना। मन को निरंतर कहते रहना कि कोटि कल्प में मुझे कोई वस्तु नहीं चाहिए। ऐसा अखंड विचार रखना तो विषय निर्मूल हो जाएंगे।'

हे साहेब ! आपको प.पू. बापा ने आशीर्वाद दिए हैं कि तुम्हारे सब संकल्प महाराज पूरे करेंगे–सो, आप ही अब हमारे लिए संकल्प करो ना ! दूसरी ओर आपके चरणों में यह भी प्रार्थना कि–जैसे आपने गुरुहरि योगीजी महाराज के हृदय का अभिप्राय जान कर स्वयं को उनकी योजना में याहोम कर दिया और संबंध वालों की माहात्म्ययुक्त सेवा में जीवन की सैकण्ड-सैकण्ड व्यतीत कर रहे हो–ऐसे ही हम गुणातीत समाज में संबंध वालों की निष्कामभाव से सेवा करके प्रत्यक्ष स्वरूपों को प्रसन्न कर लें.........

✡✡✡✡✡

निमंत्रण.......

जय स्वामिनारायण !
आइये,
सपरिवार–मित्रमंडल सहित आइये.....
नए युग की नई सहस्राब्दी में
उत्तर भारत के हमारे दिव्य परिवार के–
संतों, युवकों, बहनों व गृहस्थों के केन्द्रबिन्दु
प.पू. काकाजी के प्रतीक रूप
हम सभी के प्राणाधार
प.पू. गुरुजी की 63वीं जन्म जयंती
26 मार्च 2000, रविवार
सायं 6.`से 9.`–अनिर्देश में
प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की निश्रा में मनाकर
दर्शन, सेवा, समागम का लाभ लें..
प्रसाद: रात्रि 9:15 बजे
–योगी डिवाईन सोसाईटी, दिल्ली

Statement about Ownership and other particulars about news paper

'भगवत-कृपा'– 'THE DIVINE GRACE'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhakar Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	44-C, Janta flats, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	Anirdesh, Kakaji Lane Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhakar Rao, hereby declare thôê the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKAR RAO
Signature of Publisher

Date: 25 February, 2000

(राग:— ऐ मालिक तेरे बन्दे हम)

काकाजी के हैं सेवक हम, तेरा नाम हम करें रोशन;
सुहृद्‌भाव रखें, निर्दोषबुद्धि रखें, तुमको जो सदा है पसंद।
काकाजी के हैं.......... ॥

रोम-रोम में शास्त्री महाराज, श्वासोश्वास हैं योगी महाराज,
गुरुभक्ति अनूठी जो तुमने करी, देगी युगों युगों तक प्रकाश,
झेला योगी का तुमने वचन, और देखे असली नारायण।
सुहृद्‌भाव रखें, निर्दोषबुद्धि रखें............ ॥

करके स्व का विसर्जन बने, अखंड बापा के धारक तुम,
करके स्व का विसर्जन बने, श्रीजी के रहने का धाम तुम,
अद्‌भुत सामर्थ्य के स्वामी होकर के भी, बने भक्तों के गुलाम तुम;
ऐसे गुणातीत कबीले के हम, ये ही याद रखें हरदम।
सुहृदभाव रखें, निर्दोषबुद्धि रखें........ ॥

नई सदी में ये संकल्प करे, बस तेरे ही होकर रहें,
मनभेद छोड़ें, मतभेदों में झुकें, अब मिलजुल के जीवन जीयें,
मान कर सत्य तेरे वचन, करें नए युग का अब तो आरम्भ।
सुहृदस्नभाव रखें, निर्दोषबुद्धि रखें........ ॥

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 2.3.2000 गुरुवार — एकादशी—व्रत
(2) दि. 4.3.2000 शनिवार — महाशिवरात्रि, फराली व्रत
(3) दि. 7.3.2000 मंगलवार — ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
प.पू. गुरुजी की हिन्दी तिथि मुताबिक जयंती (फाल्गुन शुक्ल 1)
(4) दि. 13.3.2000सोमवार — प.पू. गुरुजी का प्रागट्‌य दिन
(5) दि. 16.3.2000गुरुवार — एकादशी, व्रत
(6) दि. 19.3.2000रविवार — होली, अ.म.मु. भगतजी महाराज का प्रागट्‌य दिन
(7) दि. 20.3.2000सोमवार — धुलेण्डी, प्र.ब्र.स्व. प.पू. साहेब का प्रागट्‌य दिन
(8) दि. 26.3.2000रविवार — प.पू. गुरुजी का प्रागट्‌य दिन अनिर्देश में सायं—6.00 से 9.00 मनाएंगे।

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKAR RAO FOR YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
Anirdesh, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12,Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393

TO,